PVG's

Muktangan English School & Jr. College, Pune - 9

Unit Test - I (2024 - 2025)
Standard - IX

Subject - Hindi (Composite) **Marks - 10**
Date - 12.8.2024 **Time - 9.30 a.m. to 10.45 a.m.**

सूचना :– शुद्ध भाषा एवं सुवाच्य लेखन अपेक्षित है ।

विभाग १ – गद्य

कृति १ निम्नलिखित परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

''अरे !'' कांति के मुँह से अपने खोए हुए झुमके को देखकर एक शब्द ही निकल सका । ''विश्वास मानो बहू जी, वह मुझे सड़क पर ही पड़ा हुआ मिला ।'' कमलाबाई उसके मुँह से 'अरे' शब्द सुनकर सहम सी गई ।

''वह बात नहीं है, कमलाबाई,'' दरअसल आगे कुछ कहती, इससे पहले कि कांति की आँखों के सामने कमलाबाई की लड़की की सूरत घूम गई । लड़की को उसने कभी देखा नहीं था लेकिन कमलाबाई ने उसके बारे में इतना कुछ बता दिया था कि कांति को लगता था कि उसने उसे बहुत करीब से देखा है । दुबली - पतली, गंदुमी रंग की कमजोर - सी लड़की जिसे दो महीने से उसके पति ने केवल इस कारण मायके में छोड़ा हुआ है कि कमलाबाई ने उसे दो - चार गहने भी नहीं दिए थे ।

कांति को एक पल को यही लगा कि सामने कमलाबाई नहीं, उसकी वही दुर्बल लड़की खड़ी है, जिसके एक हाथ में उसके झुमके के सेट का खोया हुआ झुमका चमक रहा है ।

''क्या सोचने लगीं बहू जी ?'' कमलाबाई के टोकने पर कांति को जैसे होश आ गया । ''कुछ नहीं'' कहकर वह उठी और आलमारी खोलकर दूसरा झुमका निकाला । फिर पता नहीं क्या सोचकर उसने वह झुमका वहीं रख दिया । आलमारी उसी तरह बंद कर वापस मुड़ी, ''कमलाबाई, तुम्हारा यह झुमका मैं बिकवा दूँगी । फिलहाल तो ये हजार रुपये ये जाओ और कोई छोटा - मोटा सेट खरीदकर अपनी बिटिया को दे देना । अगर बेचने पर कुछ जादा पैसे मिले तो में बाद में तुम्हें दे दूँगी ।'' यह कहकर कांति ने दूधवाले को देने के लिए रखे पैसों में से सौ - सौ के दस नोट निकालकर कमलाबाई के हाथ में पकड़ा दिए ।

१) आकृति पूर्ण कीजिए । (१)

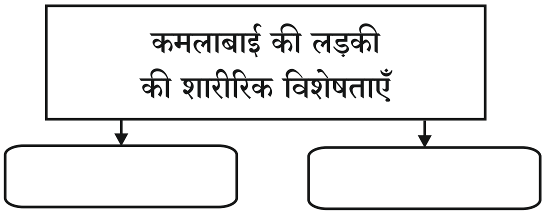

२) निम्नलिखित शब्दों के वचन पहचानकर लिखिए । (१)

१) आँखे - ______ २) झुमका - ______

३) परिच्छेद में से कोई दो प्रत्यययुक्त शब्द ढूँढकर लिखिए । (१)

१) ______ २) ______

४) अभिव्यक्ति -
'अपने घरों में काम करने वाले नौकरों के साथ सौहर्दपूर्ण (प्रेमपूर्वक) व्यवहार करना चाहिए।', (२)
इस पर अपने विचार ६ से ८ पंक्तियों में लिखिए ।

विभाग –२ पद्य

कृति २ निम्नलिखित पद्य पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

गिरिवन से निकली थी, तब मन में पाला था सपना,
जो भी पथ में मिल जाए, बस उसे बना लो अपना,
मगर मलिनता लोगों ने तो, मुझमें डाल मिलाई रे ।
कल-कल करती नदिया कहती, मुझे बचा लो भाई रे ।।

नदिया के तट पर बैठो, तो हरदम गीत सुनाती,
सूखा पड़ जाए तो भी, कितनों की प्यास बुझाती,
बिना शुल्क जल दे देती है, कितनी आए महँगाई रे ।
कल - कल करती नदिया कहती, मुझे बचा लो भाई रे ।।

नदिया नहीं रहेगी तो, सागर भी मुरझाएगा,
मुझे बताओ नाला तब, किससे मिलने जाएगा,
'हो हैया - हो हैया' की धुन, न दे कभी सुनाई रे ।
कल - कल करती नदिया कहती, मुझे बचा लो भाई रे ।।

झरना बनकर मैंने, नयनों को बाँटी खुशहाली,
सरिता बन करके खेतों में, फैलाई हरियाली,
खारे सागर में मिलकर के, मैंने दिया मिठाई रे ।
कल - कल करती नदिया कहती, मुझे बचा लो भाई रे ।।

१) आकृति पूर्ण कीजिए । (१)

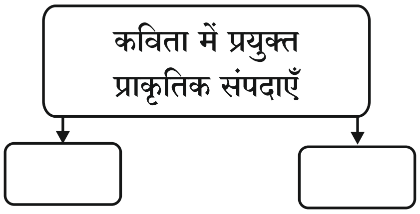

२) निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए । (१)

१) जल = ______ २) तट = ______

३) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए । (१)

१) मुरझाना X ______ २) मीठा X ______

४) अभिव्यक्ति -
'झरना बनकर मैंने, ...
.... मुझे बचा लो भाई रे ।।
उपर्युक्त पंक्तियों का सरल अर्थ २५ - ३० शब्दों में लिखिए । (२)

❖❖❖